जायसी

जीवनवृत्त — जायसी का जन्म 900 हिजरी संवत अर्थात सन 1493 में उत्तरप्रदेश में रायबरेली के अंतर्गत जायस नगर के कंचाने मुहल्ले में हुआ था और कवि ने एक स्थान पर कहा भी —

"जायस नगर मोर अस्थानू
नगर के गांव आदि दयानू"

यह पंक्ति "आखरी कलाम" की है। इसी प्रकार उन्होंने "पद्मावत" में लिखा —

"जायस नगर परम अस्थानू
तहां आई कवि कीन्ही बखानू"

अतः इसी के आधार पर डॉ० ग्रियर्सन, सुधाकर द्विवेदी इत्यादि ने इसे ही उनकी जन्मभूमि माना है।

माता-पितादि — इनके पिता का नाम मलिक शेख ममरेज या राजे अशरफ था। बचपन में ही माता-पिता की मृत्यु के कारण, ये साधुओं और फकीरों की संगति में रहने लगे। किंवदन्तियों के अनुसार जायसी का विवाह भी हुआ था और इनके दो पुत्र मकान के नीचे दबकर मर गये थे। जायसी कुरूप, एक नेत्र से विहीन तथा एक कान से रहित थे। यह सबकुछ शीतलता के प्रकोप का फल था। एक बार जब शेरशाह ने इनकी कुरूपता का उपहास उड़ाया तो उन्होंने बड़े शांत भाव से उत्तर दिया "मोहि का हंससि के कोहरहि?"

अर्थात तुम मुझ पर हंसे हो अथवा उस कुम्हार (ईश्वर जिसने मुझे बनाया है) पर? शेरशाह अत्यंत लज्जित हुए और इनका अत्यधिक सम्मान किया। इनके गुरु का नाम - शेख मुबारक शाह और शेख मुहीउद्दीन थे। इनके दो गुरु थे। इनके शिष्य का नाम- रामसिंह था जो अमेठी के राजा थे। जायसी की मृत्यु अमेठी

Scanned with CamScanner

के जंगल में शिकारी के तीर से इनकी मृत्यु 949 हिजरी संवत (सन 1542 ई०) में हुई।
इनकी तीन रचना प्रकाश में आई है—

1. आखिरी कलाम
2. पद्मावत
3. अखरावट, इत्यादि।

साकेत पंक्ति :—

"राम तुम्हारा वृत स्वयं ही काव्य है
कोई कवि बन जाय सहज सम्भाव्य है।

राम तुम मानव हो ईश्वर नहीं हो क्या
विश्व में रमे नहीं कहीं सभी हो क्या
पर मैं निरीश्वर हूँ ईश्वर क्षमा करे
तुम नहीं रमे तो मन तुममें रमा करे।

कमल तुम्हारा दिन है और कुमुद यामिनी तुम्हारी है
कोई हताश क्यों हो जाती सबकी समान बारी है।
धन्य कमल दिन जिसके धन्य कुमुद रात साथ में जिसके
दिन और रात दोनों होते हैं हाय! हाथ में किसके

बलराम कुमार

जयदेव मंदिर देहली
सम भाव से जिस पर चढ़ी
नृप हेम मुद्रा और रंक वाटिका
मुनि सत्य सौरभ की कली
कवि कल्पना जिसकी बली